प्रश्न–

(क) रामचरित मानस में किसका चित्रांकन है? (1)

(ख) 'रामचरित मानस' महाकाव्य की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ क्या हैं? (1)

(ग) कनिष्ठ शब्द का क्या अर्थ है? (1)

(घ) गद्यांश में पवनसुत किसके लिए प्रयुक्त हुआ है? क्यों? (1)

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

9. कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति एवं सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। यदि युवा पुरुष की संगति बुरी होगी, तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी जो उसे दिन-प्रतिदिन अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी जो उसे निरंतर उन्नति की ओर उठाएगी। इंग्लैंड के एक विद्वान को युवावस्था में राज दरबार में जगह नहीं मिली। इस पर जिंदगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। बहुत से लोग इसे अपना दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बांधक होती। बहुत से लोग ऐसे होते हैं जिनके घड़ी भर के साथ से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उनके बीच में ऐसी बातें कही जाती है जो कानों में नहीं पड़नी चाहिये। चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं जिनसे उनकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें धारणा में अधिक दिन तक टिकती हैं। सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं। एक बार एक मित्र ने मुझसे कहा कि उसने लड़कपन में कहीं से एक बुरी कहावत सुन ली थी जिसका ध्यान लाख चेष्टा के बाद बार-बार आता है। जिन भावनाओं को हम दूर करना चाहते हैं, वे बार-बार हृदय में उठती हैं और बेधती हैं। अतः तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र बातों से तुम्हें हँसाना चाहते हैं।

प्रश्न–

(क) कुसंग से क्या प्रभाव पड़ता है? (1)

(ख) युवा पुरुष के लिए बुरी संगति किसके समान होती है? (1)

(ग) इंग्लैंड के एक युवा विद्वान ने दरबार में जगह न मिलने पर क्या किया? (1)

(घ) युवा विद्वान आध्यात्मिक उन्नति में बुरी संगति को क्या समझता था? (1)

(ङ) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

10. हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान हैं। जिसको जो रूप अच्छा लगे उसे ही अपने मन में स्वीकार करें। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है उसका पता युवा पुरुषों को प्रायः कम रहता है। यदि विवेक से काम लिया जाए तो भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष, प्रायः विवेक से काम नहीं लेते हैं। कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके गुण-दोष कितना परख लेते हैं। पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और प्रकृति आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते, उसकी सभी बातों को अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस से दो चार बातें किसी में देख कर लोग उसे चटपट अपना बना लेते हैं। हम यह नहीं सोचते कि मैत्री